मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

नारद जयंती विशेषांक 2024

उदन्त मार्तण्ड और जुगल किशोर शुक्ल की कहानी 2

पांच वर्गों में मीडिया से जुड़े लोगों का हुआ सम्मान 3

हमेशा न्याय के पक्ष में ही खड़े होते थे देवर्षि नारद 4

फर्जी खबरों से पत्रकारिता की साख में गिरावट

नारद जयंती और हिंदी पत्रकारिता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बोले पांचजन्य के संपादक हितेश शंकर

परिसर संवाददाता

मेरठ। फर्जी खबर चलाने के फेर में पत्रकारिता की साख में गिरावट आई है। पत्रकारिता का काम झूठ को पकड़कर समाज के सामने लाने का है, लेकिन पत्रकार जब अपने संसाधनों का प्रयोग कर झूठी खबर फैलाता है तो समाज में गलत संदेश जाता है। यह बात रविवार 26 मई को विश्व संवाद केंद्र और तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में नारद जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता हितेश शंकर ने कही।

पांचजन्य के संपादक हितेश शंकर ने राष्ट्रीय आंदोलन से लेकर वर्तमान तक पत्रकारिता की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत की पत्रकारिता दुनिया का अनूठा उदाहरण है। राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले तिलक, गांधी, मालवीय, बाबा साहब आंबेडकर, लाजपत राय, डॉ. हेडगेवार आदि ने राष्ट्र सेवा का माध्यम पत्रकारिता को बनाया। मर्यादित भाषा में सत्य कहने का साहस भारतीय पत्रकारिता का गुण रहा है।

आपातकाल और उसके बाद देश की पत्रकारिता के स्वरूप में बदलाव की उन्होंने बात कही। हितेश शंकर ने कहा कि आजादी से पहले और काफी बाद तक भी शिक्षकों और पत्रकारों का समाज में बहुत सम्मान था, लेकिन बाद में समाज की यह दृष्टि बदल गई। यह बदलाव तबसे आया जब पत्रकारिता को करियर के रूप में लिया जाने लगा। पत्रकारिता में पैसा भले कम हो लेकिन पैशन की ज्यादा

हितेश शंकर

आवश्यकता है, क्योंकि समाज पत्रकारों से विशेष अपेक्षाएं रखता है। जब पैशन कम होता है तो फिर प्रश्न पैदा होते हैं।

जब देश स्वतंत्र हुआ तो यह सवाल आया कि अब पत्रकारिता का क्या स्वरूप होगा? उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में जो संकट पैदा हुआ उसके कई कारण हैं। इसमें राजनीति भी है, अर्थव्यवस्था भी है और देश को नीचा दिखाने वाले तत्व भी शामिल हैं। हितेश शंकर ने कहा कि खबरों को हमें भारत के दृष्टिकोण से दिखाना चाहिए, न कि पश्चिम के दृष्टिकोण से। मीडिया का एक बड़ा वर्ग औपनिवेशिक दृष्टिकोण से, भारत को नीचा दिखाने के उद्देश्य से खबरों का पोषण करता है। उन्होंने कहा कि आपातकाल के बाद पत्रकारिता में बड़ा बदलाव यह आया कि जो भी व्यवस्था विरोधी है, वही खबर है। कई मौकों पर व्यवस्था का विरोध उचित हो सकता है लेकिन व्यवस्था विरोध में हम देश का विरोध करने लगें तो ऐसा करना गलत है।

हितेश शंकर ने उदाहरण भी दिया कि पिछले दिनों एक खबर चली कि जर्मनी ने जी–7 देशों की अतिथि सदस्यता से भारत को बाहर करने का निर्णय लिया है। भारत में इस खबर को कई प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों ने प्रकाशित किया। लेकिन यह खबर पूरी तरह फर्जी थी और अमेरिका के एक न्यूज पोर्टल के दिमाग की उपज थी। मीडिया ने इस खबर के लिए भारत के विदेश मंत्रालय से संपर्क करने की जहमत नहीं उठाई। बाद में इस खबर का जर्मनी ने ही सबसे पहले खंडन किया कि उनका ऐसा करने का कोई भी विचार नहीं है।

हितेश शंकर ने भीमा कोरेगांव की घटना का भी जिक्र किया कि किस प्रकार मीडिया के एक समूह ने सरकार को अस्थिर करने के लिए समाचार के साथ ही आर्थिक रूप से भी माओवादियों का साथ दिया। मीडिया के एक समूह ने भारत की छवि को धूमिल करने वाले समाचार या समाज को बांटने वाले समाचारों को प्रमुखता देकर पत्रकारिता के सामने साख का संकट खड़ा किया है। इसी के साथ विभिन्न घोटालों में पत्रकारों की सक्रिय भूमिका से भी पत्रकारिता का नुकसान हुआ। समाज पत्रकारिता को संशय की नजर से देखने लगा। उन्होंने कहा कि जब पत्रकार अपने संसाधनों और अपने पद का उपयोग झूठी खबरें फैलाने के लिए करता है तो फिर पत्रकारिता की साख नहीं बचती, सम्मान नहीं बचता।

उन्होंने कहा कि आज सोशल मीडिया ने बड़े मीडिया संस्थानों की मठाधीशी को चुनौती दी है। अब वे खबरों के साथ वो मनमानी नहीं कर पा रहे हैं जो पहले करते थे। इसे काउंटर करने के लिए मीडिया का एक वर्ग 'अल्ट न्यूज' जैसे फैक्ट चेकर बनकर सामने आया। लेकिन जब पांचजन्य साप्ताहिक ने ऐसे फैक्ट चेकरों का फैक्ट चेक करना शुरू किया तो उनकी 36 खबरें ऐसी पकड़ में आईं जिनमें वो झूठ बोल रहे थे।

हितेश शंकर ने कहा कि पत्रकारों की नई पीढ़ी को तथाकथित बड़े पत्रकारों के काम का आंकलन करने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए क्योंकि बड़े–बड़े ब्रांड कुछ भी छाप रहे हैं। उसके पीछे जो बौद्धिक षड्यंत्र है, उसे उजागर किया जाना जरूरी है। उन्होंने अपेक्षा जताई कि पत्रकारिता संस्थानों में नैतिकता, शोध और तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया जाना चाहिए। राजनीतिक विज्ञान विभाग में भी पत्रकारिता को जोड़कर कुछ कार्यक्रम किए जाने चाहिए।

पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने रोपा हिंदी पत्रकारिता का बीज

परिसर संवाददाता

मेरठ। विश्व संवाद केंद्र और तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में नारद जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रचार प्रमुख सुरेंद्र कुमार ने पत्रकारिता के इतिहास को प्रस्तुत किया।

सुरेंद्र जी ने विस्तार से बताया कि हमारे देश में संवाद की

परंपरा तो हजारों साल पुरानी है, लेकिन पत्र के रूप में संचार हिकीज बंगाल गजट के रूप में शुरू हुआ जो भारत का पहला अखबार था। यह अंग्रेजी में था और इसमें भारतीयता का अभाव था। भारतीय भाषा में पहला समाचार पत्र बांग्ला भाषा में शुरू हुआ, लेकिन हिंदी में पहला अखबार 30 मई 1826 को शुरू हुआ जिसका नाम 'उदंत मार्तंड' था। इसे कानपुर निवासी पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने निकाला और इसका अर्थ था– उगता हुआ सूर्य। हालांकि यह पत्र ज्यादा समय तक नहीं चला लेकिन आज हिंदी पत्रकारिता का जो वट वृक्ष हम देख रहे हैं, वह पंडित जुगल किशोर द्वारा रोपे गए बीच से ही संभव हो सका।

सुरेंद्र जी ने बताया कि पंडित जुगल किशोर शुक्ल अपना अखबार नारंद जयंती पर ही शुरू करना चाहते थे, लेकिन किन्हीं कारणोंवश ऐसा नहीं कर सके। तब उन्होंने 30 मई से अखबार शुरू किया और अखबार में प्रथम पृष्ठ पर नारद जी का चित्र भी होता था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्व संवाद केंद्र न्यास के अध्यक्ष श्याम बिहारी लाल ने कहा कि पत्रकारिता एक विश्वास है। खबर पढ़कर या सुनकर समाज उसको सही मानता है इसलिए पत्रकारों को अपने विश्वसनीयता बनाए रखना चाहिए।

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रो. प्रशांत कुमार ने सभी का धन्यवाद व्यापित किया। स्कूल के छात्र–छात्राओं ने नाटिका द्वारा नारद मुनि से जुड़ी रोचक घटना का प्रस्तुतीकरण किया। इस अवसर पर सह प्रांत प्रचार प्रमुख प्रीतम कुमार, पंकज राज शर्मा, प्रो. नवीन चंद लोहनी, प्रो. अशोक कुमार, डा. दीपिका वर्मा, सुनील कुमार, संजीव गर्ग, मितेंद्र गुप्ता, डा. दिशा दिनेश, सुमंत डोगरा, लव कुमार, राकेश कुमार, ज्योति वर्मा आदि उपस्थित रहे।

ज्ञान का विस्तार कर राष्ट्र के बारे में चिंतन करें पत्रकार

परिसर संवाददाता

मेरठ। तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में नारद जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय कला संकाय के डीन और अकादमिक डायरेक्टर प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि नारद श्रेष्ठता के प्रतीक थे। उनको फिल्मों में गलत रूप में प्रस्तुत कर उनकी छवि को धूमिल करने का काम किया गया। पत्रकारिता व्यक्तित्व का विकास करती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीयता के विषय में हम क्या कर सकते हैं, पत्रकारों को इस विषय में चिंतन करना चाहिए। अपने ज्ञान के क्षेत्र का भी विस्तार करना चाहिए। आधुनिकता के साथ भारत का अच्छा चरित्र प्रस्तुत करें।

बहुत ही सामयिक आयोजन : पांचजन्य के संपादक हितेश शंकर ने कहा कि यह आयोजन बहुत ही सामयिक और तथ्यात्मक रहा। कार्यक्रम का विषय 'पत्रकारिता की विश्वसनीयता' भी बहुत सही था। पत्रकारिता एक विचार को लेकर चलने की चीज है और समाज में उसके लिए सबसे जरूरी उसकी विश्वसनीयता है।

नारद मुनि कैसे बने विश्व के प्रथम संवाददाता

सूचना और संवाद के क्षेत्र में सबसे पहला नाम नारद मुनि का ही आता है। अपनी वीणा की मधुर तान पर भगवद् गुणों का गान करते हुए निरंतर विचरण करने वाले नारद मुनि सब जगह की पल–पल की खबर रखते थे। नारद जी समस्त लोकों में, देव हो या दानव, सबके विश्वासपात्र थे। ये सबके बीच संवाद स्थापित करने का काम करते थे। नारद जी ने ही वेदों का संपादन करके यह निश्चित किया था कि कौन–सा मंत्र किस वेद में जाएगा, अर्थात् ऋग्वेद में कौन–से मंत्र जायेंगे या यजुर्वेद में कौन–से मंत्र जायेंगे। विष्णु जी के परम भक्तों में सबसे ऊपर नारद जी का ही नाम आता है।

खड़ी शिखा, हाथ में वीणा लिये मुख से 'नारायण' शब्द का जाप करते हुए भगवान के गुणों का गान करते नारद मुनि निरंतर विचरण किया करते हैं।

ग्रंथों में देवर्षि नारद को भगवान विष्णु का ही अवतार बताया गया है। भगवान की हर लीला में नारद जी का हाथ होता है। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए श्रीमदभागवत गीता के दशम अध्याय के 26वें श्लोक में कहा है– देवर्षीणाम्चनारद ! अर्थात् देवर्षियों में मैं नारद हूं। अथर्ववेद, मैत्रायणी संहिता आदि में भी नारद जी का उल्लेख है।

महाभारत के सभा पर्व के पांचवें अध्याय में नारद जी के व्यक्तित्व का परिचय भली–भांति दिया गया है। उसमें कहा गया है– देवर्षि नारद वेद–उपनिषदों के मर्मज्ञ, देवताओं के पूज्य, इतिहास व पुराणों के विशेषज्ञ, शिक्षा, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, खगोल–भूगोल के विद्वान, त्रिलोकी पर्यटक, संगीत के ज्ञाता, प्रभावशाली वक्ता, अच्छे नीतिज्ञ, कवि, बृहस्पति जैसे महा विद्वानों की शंकाओं का समाधान करने वाले और सर्वत्र गति वाले हैं ।

> नारद जी की महिमा को याद करने के लिये ही ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि को नारद जयंती मनाई जाती है, क्योंकि देवर्षि नारद को आदि संवाददाता या एक पत्रकार के रूप में देखा जाता है। इसलिए इनकी जयंती पर पत्रकारों के सम्मान में प्रतिष्ठित नारद पत्रकार सम्मान समारोह आयोजित किया जाता है। समारोह में उन पत्रकारों को सम्मान दिया जाता है, जिन्होंने समाज की भलाई लिये अपना योगदान दिया हो। इस मौके पर गोष्ठियों एवं प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है।

शास्त्रों के अनुसार नारद मुनि ब्रह्मा जी के सात मानस पुत्रों में से एक हैं। शास्त्रों में नारद मुनि को देवर्षि की उपाधि दी गई है, लेकिन बड़ी कठिन तपस्या के बाद ही उन्हें देवर्षि का पद प्राप्त हुआ था। देवर्षि नारद धर्म तथा लोक कल्याण के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। नारद जी ने अनगिनत ऐसे काम किए हैं जिन्हें दूसरों के लिये कर पाना बहुत मुश्किल था।

नारद जी ने ही भृगु कन्या लक्ष्मी का विवाह विष्णु के साथ करवाया, महादेव द्वारा जलंधर का विनाश करवाया, कंस को आक. ाशवाणी का अर्थ समझाया, वाल्मीकि जी को रामायण की रचना करने की प्रेरणा दी, व्यास से भागवत की रचना करवायी, प्रह्लाद और ध्रुव को उपदेश देकर महान भक्त बनाया, बृहस्पति और शुकदेव जैसे महान ज्ञाताओं को उपदेश देकर शंकाओं का समाधान किया।

नारद जी ने कई वेदों की रचना भी की है। उन्होंने 'नारद पांचरात्र', 'नारद के भ. क्तिसूत्र', 'बृहन्नारदीय उपपुराण संहिता', 'नारद–परिव्राज कोपनिषद' के अलावा 18 महापुराणों में से एक 25 हजार श्लोकों वाले प्रसिद्ध 'नारद महापुराण' की रचना की है। इस पुराण में भगवान विष्णु की भक्ति की महिमा, मोक्ष, धर्म, संगीत, ब्रह्मज्ञान, प्रायश्चित आदि अनेक विषयों के बारे में विस्तार से बताया गया है। हालांकि वर्तमान में उपलब्ध नारद पुराण में केवल बाईस हजार श्लोक हैं। बाकी तीन हजार श्लोक प्राचीन पाण्डुलिपि के नष्ट हो जाने के कारण उपलब्ध नहीं हैं। इन श्लोकों में से 750 श्लोक ज्योतिषशास्त्र पर आधारित हैं।

उदन्त मार्तण्ड और पंडित जुगल किशोर शुक्ल की कहानी

30 मई की तारीख भारतीय इतिहास में हिन्दी पत्रकारिता दिवस के तौर पर दर्ज हुई। यही वो तारीख थी जब 'उदन्त मार्तण्ड' नाम से पहला हिन्दी अखबार निक. ाला गया। इसे पहली बार 30 मई 1826 को साप्ताहिक समाचार पत्र के तौर पर निकाला गया, जिसकी शुरुआत की कानपुर के पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने, जो इस अखबार के लिए प्रकाशक भी थे और संपादक भी।

पंडित जुगल किशोर शुक्ल पेशे से वकील भी रहे थे। जिस दौर में इसका प्रक. ाशन हुआ वो दौर अंग्रेजों का था। कलकत्ता अंग्रेजों का बड़ा केंद्र था। कलकत्ता में अंग्रेजी और उर्दू और दूसरी भाषा के अखबर मौजूद थे, लेकिन हिन्दी भाषा के लोगों के पास उनकी भाषा का कोई अखबार नहीं था। उस दौर में हिंदी भाषियों को अपनी भाषा के समाचार पत्र की जरूरत महसूस हो रही थी। इस तरह इसकी शुरुआत हुई।

ऐसे हुई शुरुआत

जुगल किशोर ने इसकी शुरुआत के लिए कलकत्ता को चुना। इस शहर को अपनी कर्मस्थली बनाया। ऐसा इसलिए क्योंकि उस दौर में ब्रिटिश भारत में अंग्रेजों का प्रभाव अधिक था। वहां अंग्रेजों की भाषा के बाद बांग्ला और उर्दू का भी असर देखने को मिल रहा था, लेकिन हिन्दी भाषा का एक भी समाचार पत्र नहीं था।

कोलकाता के बड़ा बाजार इलाके के अमर तल्ला लेन, कोलू टोला से साप्ताहिक अखबार के तौर पर की शुरुआत हुई। मंगलवार इसके प्रकाशन का दिन था, जब पाठकों के हाथों में पहला हिन्दी का अखबार पहुंचता था। 'उदन्त मार्तण्ड' के नाम का मतलब था समाचार सूर्य। अपने नाम की तरह ही यह हिन्दी समाचार दुनिया के सूर्य जैसा ही था।

पहले अंक की 500 प्रतियां छपीं

'उदन्त मार्तण्ड' अपने आप में एक साहसिक प्रयोग था, जिसकी पहले अंक की 500 प्रतियां छापी गई थीं। हिन्दी भाषी पाठकों की कमी के कारण कलकत्ता में उसे उतने पाठक नहीं मिले। कलकत्ता को हिन्दी भाषी राज्यों से दूर होने के कारण अखबार को डाक के जरिए भेजा जाता था, लेकिन डाक विभाग की दरें ज्यादा होने के कारण इसे हिन्दी भाषी राज्यों में भेजना चुनौती बन गया। इसके विस्. तार में दिक्कतें होने लगीं।

इसका समाधान निकालने के लिए पंडित जुगल किशोर ने ब्रिटिश सरकार से डाक दरों में रियासत की बात कही ताकि हिन्दी भाषी प्रदेशों में इसे पाठकों तक पहुंचाया जा सके, लेकिन ब्रिटिश सरकार इसके लिए राजी नहीं हुई।

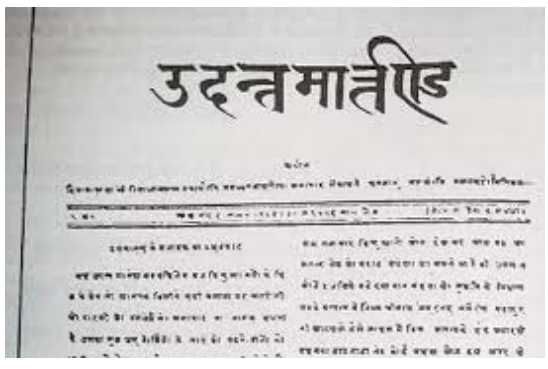

पैसों की तंगी की वजह से 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन लम्बे समय तक नहीं चल सका। नतीजतन, 4 दिसम्बर 1826 में इसका प्रकाश बंद कर दिया गया। 79 अंक निकालने के बाद पंडित जुगल किशोर ने लिखा कि आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त, अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।

भले ही यह अखबार लम्बी दूरी नहीं तय कर पाया, लेकिन इतिहास में अपनी खास जगह बनाई और इसके बाद कई हिन्दी अखबारों का दौर शुरू हुआ, जो जारी है।

यह समाचार पत्र पुस्तक आकार यानी 12ध्8 आकार में छपता था। इसकी भाषा खड़ी बोली और ब्रज का मिश्रण थी, जिसे इसके संपादक मध्यदेशीय भाषा कहते थे। इसमें उस समय की परिस्थितियों के अनुसार तीखे कटाक्ष भी छपते थे।

इस पत्र की प्रारंभिक विज्ञप्ति इस प्रकार थी

यह ''उदन्त मार्तण्ड'' अब पहले–पहल हिंदुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया पर अंग्रेजी ओ पारसी ओ बंगाल में जो समाचार का कागज छपता है उनका सुख उन बोलियों के जानने और पढ़ने वालों को ही होता है। और सब लोग पराए सुख से सुखी होते हैं। जैसे पराए धन धनी होना और अपनी रहते परायी आंख देखना वैसे ही जिस गुण में जिसकी पैठ न हो उसको उसके रस का मिलना कठिन ही है और हिंदुस्तानियों में बहुतेरे ऐसे हैं। इससे सत्य समाचार हिंदुस्तानी लोग देख आप पढ़ ओ समझ लेयँ ओ पराई अपेक्षा न करें ओ अपने भाषे की उपज न छोड़े। इसलिए दयावान करुणा और गुणनि के निधान सब के कल्यान के विषय गवरनर जेनेरेल बहादुर की आयस से ऐसे साहस में चित्त लगाय के एक प्रकार से यह नया ठाट ठाटा...।

उदन्त मार्तन्ड के उद्देश्य के सम्बन्ध में बांग्ला साप्ताहिक 'समाचार चंद्रिका' ने लिखा था कि–

अज्ञान तथा रूढ़ियों के अँधेरों में जकड़े हुए हिन्दुस्तानी लोगों की प्रतिभाओं पर प्रकाश डालने और 'उदंत मार्तण्ड' द्वारा ज्ञान के प्रकाशनार्थ' इस पत्र का श्री गणेश हुआ था। और, 'हिन्दुस्तान और नेपाल आदि देशों के लोगों, महाजनों तथा इंगलैंड के साहबों के बीच वितरित हुआ और हो रहा है।

पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने अंतिम सम्पादकीय के अन्त में ग्राहकों एवं पाठकों से निवेदन किया था कि ''हमारे कुछ कहे–सुने का मन में न लाइयो जो दैव और भूधर मेरी अन्तरव्यथा और गुण को विचार सुधि करेंगे तो मेरे ही हैं। शुभमिति।''

शुक्ल ने इस पत्र के बाद भी 'समदन्त मार्तण्ड' नामक एक और पत्र निकालने की हिम्मत जुटायी, लेकिन दुर्भाग्य से वह भी अल्पायु निकला।

यहां बताते चलें कि भारतीय जनसंचार संस्थान ने अपने पुस्तकालय का नाम जुगल किशोर शुक्ल के नाम पर रखा है।

अखबार निकालने का उद्देश्य

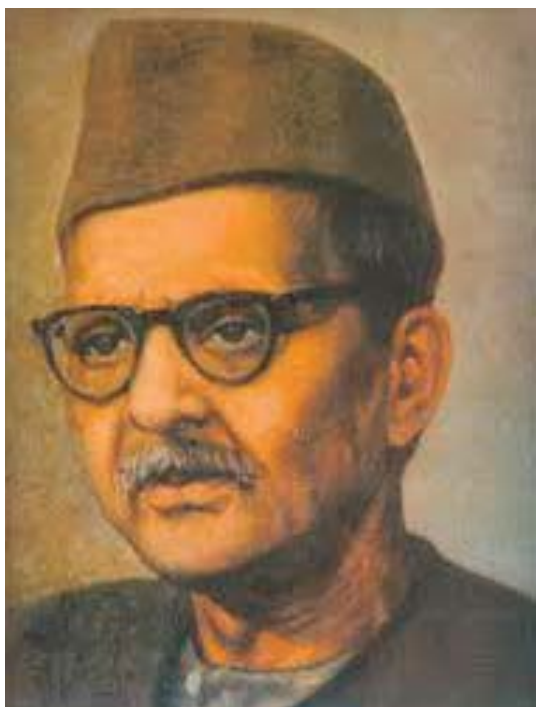

संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला के जानकार जुगल किशोर पहले सदर दीवानी अदालत में प्रोसीडिंग रीडर यानी पेशकारी थे और फिर वकील बन गए थे। 'हिंदी और हिंदी समाज' या 'हिंदुस्तानियों' का उत्थान इस अखबार को निकालने का उद्देश्य था। इस अखबार के उद्देश्य के बारे में संपादक ने लिखा था कि अखबार जिस भाषा में छपता है, उसका सुख उस भाषा के जानने और पढ़ने वालों को ही होता है। इसलिए हिंदुस्तानियों को उनकी भाषा में समाचार देने के लिए यह अखबार शुरू किया गया है ताकि लोग अपनी भाषा से जुड़े रहें। एक अन्य जगह लिखा गया कि अज्ञान तथा रूढ़ियों के अंधेरों में जकड़े हिन्दुस्तानी लोगों की प्रतिभाओं पर प्रकाश डालने और ज्ञान के प्रकाशनार्थ इस पत्र का श्री गणेश हुआ है। यह हिन्दुस्तान और नेपाल आदि देशों के लोगों, महाजनों तथा इंग्लैंड के साहबों के बीच वितरित हुआ और हो रहा है।

निर्णायक मंडल : वरिष्ठ पत्रकार अजय मित्तल, वरिष्ठ पत्रकार शरद व्यास, शिक्षक डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव और सोशल मीडिया एक्टिविस्ट पंकज राज शर्मा निर्णायक मंडल में शामिल रहे।

पांच वर्गों में मीडिया से जुड़े लोगों का हुआ सम्मान

अटल सभागार में 26 मई को नारद जयंती और पत्रकारिता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पांच वर्गों में सम्मानित किए गए मीडिया से जुड़े लोग अतिथियों के साथ।

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय स्थित तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल और विश्व संवाद केंद्र ने 26 मई को संयुक्त रूप से नारद जयंती और हिंदी पत्रकारिता दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों से पांच लोगों को सम्मानित किया गया।

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने बताया कि पिछले करीब 15 वर्षों से यह कार्यक्रम आयोजित होता है जिसमें पांच वर्गों में मीडिया से जुड़े लोगों का सम्मान किया जाता है। इनमें प्रिंट मीडिया पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकार, फोटोग्राफर/वीडियोग्राफर, सोशल मीडिया मीडिया और शिक्षक शामिल हैं।

इस वर्ष इन सभी कैटेगरी में करीब 70 आवेदन प्राप्त हुए। चार सदस्यीय जूरी ने काफी विचार–विमर्श के बाद पांच नामों को अपनी स्वीकृति दी। जूरी में अजय मित्तल, मनोज कुमार श्रीवास्तव, पंकज राज शर्मा और शरद व्यास शामिल थे।

इस वर्ष प्रिंट मीडिया वर्ग में हिंदुस्तान मुरादाबाद के संपादक भूपेश उपाध्याय का चयन किया गया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से उमेश श्रीवास्तव का चयन हुआ जो न्यूज 18 से जुड़े पत्रकार हैं। फोटोग्राफर के वर्ग में दैनिक जागरण आई नेक्स्ट के फोटोग्राफर शिवम अग्रवाल का सम्मान हुआ। सोशल मीडिया वर्ग में दिव्य कुमार सोती को सम्मानित किया गया। मीडिया शिक्षक वर्ग में तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल की शिक्षिका डॉ. बीनम यादव का चयन किया गया।

पुरस्कार स्वरूप 11 हजार रुपये की नकद राशि, स्मृति चिह्न, शॉल और प्रमाणपत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम के अतिथि हितेश शंकर, प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा और श्याम बिहारी लाल ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : प्रोफेसर प्रशांत कुमार, **संपादक** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **समाचार संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी चतुर्थ व छठे सेमेस्टर और एमएजेएमसी द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के छात्र–छात्राएं।

कलाकार भी हुए सम्मानित : सम्मान समारोह में देवर्षि नारद के जीवन पर लघु नाटक का मंचन करने वाले तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के छात्र–छात्राओं को भी विश्व संवाद केंद्र की ओर से सम्मानित किया गया। सभी ने छात्र–छात्राओं के प्रयास की प्रशंसा की।

हमेशा न्याय के पक्ष में ही खड़े होते थे नारद

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के छात्र–छात्राओं ने आदि संवाददाता नारद पर प्रस्तुत किया लघु नाटक

परिसर संवाददाता

मेरठ। तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल और विश्व संवाद केंद्र की ओर से 26 मई को आयोजित नारद जयंती व हिंदी पत्रकारिता दिवस समारोह के दौरान भावी पत्रकारों ने एक लघु नाटिका का मंचन किया। तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के छात्र–छात्राओं ने इस नाटक में दिखाया कि किस प्रकार देवर्षि नारद मुनि आदि संवाददाता कहे जाते थे और इस दौरान किस प्रकार वह निष्पक्षता का प्रदर्शन करते थे।

अटल सभागार में हुए इस आयोजन में नाटक के कलाकारों ने दिखाया कि किस प्रकार एक दादा अपनी पोती को महर्षि नारद मुनि की कथा सुनाते हैं। बात उस समय की है जब कर्ण वर्ण का राजा हिरण्यकश्यप चाहता था कि लोग ईश्वर की पूजा न करके उसे ही भगवान समझें और उसकी पूजा करें। स्वयं को बलशाली दिखाने के लिए उसने ईश्वर के अनेक भक्तों की हत्याएं कीं। उसके इस महापाप से तीनों लोकों में मानवता कराह उठी। इन दृश्यों को देखकर देवर्षि नारद मुनि गहन चिंता में डूबे हुए थे।

एक बार जब हिरण्यकश्यप तप करने के लिए चला गया तो देवराज इंद्र ने अवसर देखकर उसके नगर पर आक्रमण कर दिया और कर्ण वर्ण की राजरानी कयाधु को बंदी बना लिया जो कि गर्भवती थी। इस पर देवर्षि नारद मुनि वहां पहुंचे और इंद्र को समझाया कि वे यह घोर पाप न करें। उनके समझाने पर इंद्र मान गए। तब देवर्षि नारद मुनि कयाधु को अपने आश्रम में ले गए और उसके बालक को शिक्षा दीक्षा प्रदान करके एक महान ईश्वर भक्त बालक बनाया। वही बालक जिसे आज हम भक्त प्रह्लाद के नाम से जानते हैं।

नाटक में दादा जी ने पोती को बताया कि इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जब न्याय की बात आई तो आदि संवाददाता देवर्षि नारद मुनि ने देवराज इंद्र का विरोध किया और दानव की पत्नी कयाधु के शिशु की रक्षा की। ऐसा करके उन्होंने संवाददाता या आज के परिप्रेक्ष्य में कहें तो पत्रकारिता के उस गुण का उदाहरण प्रस्तुत किया जिसे निष्पक्षता कहते हैं।

नाटक के अंत में पोती इस कहानी से प्रेरणा लेते हुए एक निष्पक्ष पत्रकार बनने की निश्चय करती है। नाटक में दादा–पोती की भूमिका क्रमशः लव कुमार सिंह और दिव्या जोशी ने निभाई। हिरण्यकश्पय की भूमिका वंश भाटी ने, कयाधु की भूमिका दीया ने, इंद्र की भूमिका पार्थ ने और देवर्षि नारद मुनि की भूमिका प्रेरणा ने निभाई।

नाटक का निर्माण और निर्देशन शिवम तुरैहा, खुशी वर्मा और विन्नी ने किया। स्क्रिप्ट लेखन दिव्या जोशी ने किया। शिवम यादव, पायल, जोया सिद्दीकी, अब्दुल्ला, सूर्यांश, आशीष ने सहयोगी कलाकार की भूमिका निभाई।

दर्शकों ने नाटक को बहुत पसंद किया।

अटल सभागार में नारद मुनि के जीवन पर लघु नाटक प्रस्तुत करते तिलक स्कूल के छात्र–छात्राएं।

अटल सभागार में नारद मुनि के जीवन पर लघु नाटक के दौरान कलाकारों के अभिनय की कुछ झलकियां।